कलीसिया और संस्कार

कलीसिया और संस्कार :पाठ्यक्रम

टिप्पणियाँ –

कक्षा #१:

I. पाठ्यक्रम का परिचय।
II. कलीसिया।
   क. नए नियम का अध्ययन।
   ख. कलीसिया की लोकप्रिय तस्वीर।

कक्षा #२:

II. कलीसिया: (जारी।)
   ग. कलीसिया क्या है?
   घ. बाइबल आधारित कलीसिया के नमूने।

कक्षा #३:

II. कलीसिया: (जारी।)
   घ. बाइबल आधारित कलीसिया के नमूने।
III. संस्कार:
   क. बपतिस्मा।

कक्षा #४:

III. संस्कार: (जारी।)
   क. बपतिस्मा।
   ख. प्रभु भोज।

कक्षा #५:

III. संस्कार: (जारी।)
   ख. प्रभु भोज।
   परीक्षा।

टिप्पणियाँ -

कलीसिया और संस्कार: परीक्षा

संभावित २० अंक प्रश्न

१) कलीसिया की तीन लोकप्रिय तस्वीरों का चुनाव करें तथा उनके सकारात्मक और नकारात्मक पहलुओं को समझाते हुए प्रत्येक की व्याख्या करें (पृष्ठ ८७)।

२) बाइबल आधारित कलीसिया के नमूनों में से किसी एक का चुनाव करें और उसे परिभाषित करें तथा समझाएँ (पृष्ठ ८९-९५)।

३) बप्तिस्में के अर्थ पर चर्चा करें कि बपतिस्मा क्या है और क्या नहीं है (पृष्ठ १९९-१०१)।

संभावित १० अंक प्रश्न

१) एक सामुदायिक केंद्र के रूप में कलीसिया की तस्वीर किस प्रकार नकरात्मक हो सकती है (पृष्ठ ८७)?

२) "कलीसिया" शब्द को परिभाषित करें (पृष्ठ ८८, ८९)।

३) ऐसे दो बाइबल के वचनों को सूचित करें जो "परमेश्वर के परिवार" कलीसिया के नमूने का समर्थन करते हों (पृष्ठ ८९)।

४) "बपतिस्मा" शब्द को परिभाषित करें (पृष्ठ ९७)।

५) इस बात पर बहस क्यों होनी चाहिए कि किसी व्यक्ति को बपतिस्मा देने का सबसे उत्तम तरीका पानी में डुबकी देना है? (पृष्ठ ९८)।

६) प्रभु भोज लेने के दौरान हम अपने आस-पास लोगों को किस सोच-विचार से देखते हैं (पृष्ठ १०४)?

कलीसिया और संस्कार

टिप्पणियाँ -

I. पाठ्यक्रम का परिचय।

क. कलीसिया।

१. "कलीसिया" के विषय पर कई अलग-अलग तरीकों से अध्ययन किया जा सकता है। हम इस पाठ्यक्रम में कलीसिया के स्वभाव का अध्ययन करना चाहते हैं। कलीसिया क्या है? हम कलीसिया की व्याख्या कैसे कर सकते हैं?

२. हमारा ध्यान विभिन्न बाइबल की समरूपताओं के अध्ययन पर होगा जो कलीसिया और कलीसिया के कार्यों की व्याख्या करने के लिए इस्तेमाल किये जाते हैं।

ख. संस्कार।

१. हम बप्तिस्में का अध्ययन करेंगे।
२. हम प्रभु भोज के विषय पर अध्ययन करेंगे।

II. कलीसिया।

क. नए नियम का अध्ययन।

१. सुसमाचार।

क. मत्ती १६:१८।

ख. मत्ती १८:१५-१७।

२. नए नियम के शेष भाग।

क. प्रेरितों २:४१-४७; ४:३२-३७; ५:११; ८:१-३; ९:३१; ११:१९-२६; १२:१-५; १४:२७; १५:३, ४, ४१; १६:५; १८:२२, २३; २०:२८।

ख. रोमियों १२:४, ५; १६:५; १६:१६; १६:२३।

ग. १ कुरि. १:२, ९; ३:१६, १७; ७:१७; १०:३२; ११:१६-२२; १२:१२-२७; १४:१२; १५:९; १६:१९।

घ. २ कुरि. १३:१४।

ड. गला. १:१, २, २२; ६:१६।

च. इफि. १:२२, २३; २:१९-२२; ३:१०; ३:२१; ५:२३-३२।

टिप्पणियाँ -

छ. कुलु. १:१८, २४; ४:१५, १६।

ज. १ थिस्सलुनीकियों २:१४।

झ. २ थिस्सलुनीकियों १:४।

ञ. १ तीमुथियुस ३:१४, १५।

ट. फिलेमोन १:२।

ठ. इब्रानियों १२:२२-२४।

ड. १ पतरस २:४-१०।

ढ. १ यूहन्ना १:३-७।

ण. प्रका. १:४; २; ३; २२:१६, १७।

ख. कलीसिया की लोकप्रिय तस्वीर (कलीसिया को लेकर लोगों का समझ)।

चर्चा विषय

निम्नलिखित आरेख का अध्ययन करें, और चर्चा व अनुप्रयोग को बढ़ावा दें।

चाहे अच्छे या बुरे के लिए यह कुछ कलीसिया की वर्तमान तस्वीरें हैं।
प्रत्येक तस्वीर के सकारात्मक पहलुओं पर चर्चा करें।
किस प्रकार यह तस्वीर लोगों की कलीसिया और मसीहियत को सही नज़रिए से देखने में सहायता करेगी।

इसके अलावा कुछ नकारात्मक तरीकों पर भी विचार करें जिसमें छवि कलीसिया की समझ को बिगाड़ती है। कैसे एक छवि कलीसिया के वास्तविक उद्देश्य को खराब कर सकती है?

उदाहरण के तौर पर, बहुत से लोग कलीसिया को एक किले की तरह देखते हैं।
निस्संदेह कलीसिया को एक सुरक्षा और बल के रूप में देखा जाना चाहिए।
परन्तु क्या कलीसिया रक्षात्मक होने पर आधारित है?
मत्ती १६:१८ पर ध्यान दें, यह प्रतिद्वंदी वह है जिसके पास द्वार है!

कलीसिया और संस्कार

टिप्पणियाँ -

तस्वीर	सकरात्मक	नकारात्मक
एक रेलवे स्टेशन	१) यह कलीसिया में आशा को बढ़ावा देता है और केन्द्रित करता है। २) इसमें मृत्यु का भय कम पाया जाता है ३) इसमें अन्य लोगों के लिए सकारात्मक प्रस्ताव मिलते हैं	१) जय पाने बजाय पकड़ने का मनोभाव २) यह कलीसिया की सामर्थ और उसके फल का इनकार कर सकता है ३) लोगों में आलसपन आ सकता है
एक सहारा	१) एक तरीके से यह सत्य है; उदाहरण के लिए गलातियों ६:२ पर विचार करें २) यह सत्य है कि हम कमज़ोर हैं और हमें यीशु की ज़रूरत है	१) ऐसी धारणा है कि कलीसिया को उन ही परिस्थितियों में इस्तेमाल करें जिस में आपकी अपनी योग्यता शामिल हो २) जयवंत लोगों की कमी
एक टिकट	१) कलीसिया एक वाहन के समान है जिसका इस्तेमाल लोगों को यीशु की ओर खींचने के लिए किया जाता है।	१) इसमें एक भ्रम पाया जाता है कि कलीसिया के द्वारा उद्धार होता है
एक किला	१) परमेश्वर में सुरक्षा २) परमेश्वर पर निर्भरता ३) समूह की सामर्थ	१) कलीसिया को रक्षा करने वाले दल के रूप में सोचने की प्रवृत्ति। २) लोग किले से कभी भी बाहर नहीं निकलते
गैस स्टेशन	१) कलीसिया को इक्कठा करने के लिए एक स्थान हो सकता है और होना भी चाहिए।	१) स्थिरता की कमी पायी जा सकती है (अधिकतम मात्र में)
शरणस्थान	१) स्वीकृति और सुरक्षा	१) भाग निकलने की मानसिकता
सामुदायिक भवन	१) संगती और समुदाय २) सदस्यों के लिए सेवा	१) एक गोष्ठी मण्डल बनने तथा दूसरों के बारे में भूल जाने की प्रवृत्ति
नाटकशाला	१) कलीसिया को एक रोमांचक और लोकप्रिय स्थान के रूप में देखा जाता है।	१) इसमें संसार के जैसे होने की प्रवृत्ति पायी जाती है

१. कई लोगों का मानना है कि कलीसिया एक इमारत के अलावा कुछ नहीं है। हालांकि, कलीसिया कोई इमारत नहीं है। यदि कलीसिया सिर्फ एक इमारत होती, तो चौथी शताब्दी से पहले कलीसियाएं न होती। प्रारंभिक कलीसिया इमारतों में नहीं मिला करते थी। वह घरों में मिला करते थे।

क. "आपका चर्च कहाँ है" यह पूछना इन लोगों का पसंदीदा प्रश्न होता है।

ख. जब वे कहते हैं "चर्च" तो उनका सोचना "इमारत" को लेकर होता है।

टिप्पणियाँ -

२. कई लोगों का यह मानना होता है कि चर्च अर्थात कलीसिया एक डिनॉमनैशन (समप्रदाय) है। उन्हें यह भी लगता है कि चर्च कोई अन्य संगठन या संस्था है।

क. इन लोगों का एक पसंदीदा प्रश्न यह भी होता है कि, "आपके चर्च (कलीसिया) का नाम क्या है?"

ख. जब वह कहते हैं "चर्च" तो उन्हें लगता है कोई "संस्था"।

३. कई लोगों ऐसा विचार रखते हैं कि कलीसिया एक व्यवसायिक सेवकाई है। पूर्णकालिक, कलीसिया में अभिषिक्त सेवक। कई लोग कभी-कभी उनकी सहायता कर सकते हैं, लेकिन वह कलीसिया में नहीं होते। वे कलीसिया को व्यवसाय या किसी व्यापार के रूप में देखते हैं।

क. इन लोगों का पसंदीदा प्रश्न होता है कि, "आप कौन से पद पर हैं?"

ख. जब वे कहते हैं "चर्च" तो उनका सोचना होता है "व्यवसाय"।

चर्चा विषय

किस प्रकार आपका अतीत या संस्कृति आपकी "कलीसिया" की अभिज्ञता या इस समझ पर प्रभाव डाल सकती है?

क्या होता है जब मसीही लोग कलीसिया को एक इमारत, संस्था या किसी व्यवसाय के रूप में देखते हैं?

ग. कलीसिया क्या है?

१. शब्द "चर्च" यूनानी में ekklesia (इक्कलिसिया) है। इसके दो भाग हैं।

क. "ek (एक)" – का अर्थ है "बाहर"।

ख. "klesia (क्लेसिया)" - का अर्थ है "बुलाए हुए"।

२. नए नियम में, "eklesia (इक्कलिसिया)" को चार अलग तरीकों से इस्तेमाल किया गया है।

क. सार्वभौमिक कलीसिया (देखें इफि. १:२२; ३:१०, २१; १ कुरि. १०:३२; १२:२८; फिली. ३:६; कुलु. १:१८, २४)।

ख. स्थानीय कलीसिया (रोमियों १६:१; १ कुरि. १:२; १ थिस्सलुनीकियों १:१; कुलु. ४:१६)।

टिप्पणियाँ -

ग. आराधना के लिए विश्वासियों का मिलना (देखें १ कुरि. ११:१८; १४:१९, २३)।

घ. सभाओं का स्थान, आमतौर पर एक घर (देखें रोमियों १६:५; १ कुरि. १६:१९)।

३. पौलुस के समयकाल में इस शब्द का अर्थ बुलाए गए लोगों के एक साथ मिलने-जुलने या उनकी सभा से था। इसलिए, कलीसिया का मतलब इस संसार से अलग कर के बुलाए गए लोगों का एक साथ इकठ्ठा होना है।

घ. बाइबल आधारित कलीसिया के नमूने।[१]

१. परमेश्वर के लोग या परमेश्वर का परिवार।

क. यह पुराने नियम में निर्गमन ६:६ से आरम्भ होने वाला सत्य है, जो कि नए नियम के अंत तक प्रकाशितवाक्य २१:३ में देखने को मिलता है।

ख. इस्राएल को परमेश्वर के लोगों के रूप में देखा गया है (देखें होशे ११:७; भजन. १००:३)।

ग. कलीसिया को परमेश्वर के लोगों के रूप में देखा गया (देखें १ पत. २:१०; १ कुरि. ३:९)।

घ. हम अपनी आत्मिक समझ से यह कह सकते हैं कि कलीसिया नया इस्राएल है (देखें रोमियों ९:६-८; गलातियों ३:६-८; गलातियों ६:१६)।

ङ. इस प्रकार, कलीसिया के पास इस्राएल की ज़िम्मेदारी है। कलीसिया के पास परमेश्वर के लोगों की ज़िम्मेदारी है।

१) कलीसिया को अपने शब्दों और अपने कामों से परमेश्वर की महिमा करनी चाहिए (देखें व्यवस्थाविवरण ४:५, ६; १ पतरस २:९,११; मत्ती ५:१४-१६)।

२) इसे अपने जीवन से परमेश्वर की महिमा करनी चाहिए (देखें २ कुरि. ६:१६-१८; तीतुस. २:११-१४)।

टिप्पणियाँ -

च. हमें यह याद रखना चाहिए कि कलीसिया परमेश्वर के लोग हैं।

१) यह परमेश्वर का व्यक्ति नहीं है (यद्यपि यह सत्य है कि प्रत्येक मसीही जन पवित्र आत्मा का मंदिर है)।

२) कलीसिया मसीहियों अथवा पवित्र लोगों से बनी है क्योंकि नए नियम में उन्हें कलीसिया नाम दिया है।

क) "पवित्र लोग (संत)" शब्द का नए नियम में ६१ उपयोग हुआ है।

ख) यह हर बार "संतों अर्थात पवित्र लोगों" (बहुवचन में) पाया जाता है।

३) कलीसिया का अर्थ किसी एक का विश्वासी होना नहीं है।

क) यह विश्वासियों का समूह है।

ख) यह परमेश्वर का **परिवार** है।

४) अतः, कलीसिया के जीवन का वर्णन "एक दूसरे के लिए" करने के वाक्य से भरा हुआ है।

५) परमेश्वर के लोग परमेश्वर का परिवार हैं (देखें १ यूहन्ना १:३; गला. ३:२९)।

६) कलीसिया के लोग परमेश्वर के पुत्र व पुत्रियाँ हैं। इसलिए, वे भाई-बहन हैं (इफिसियों २:१९)।

चर्चा विषय

कलीसिया के एक मसीही के जीवन में कलीसिया को लेकर उसके दृष्टिकोण पर क्या प्रभाव पड़ता है जब वे इस बात को जानने लगते हैं कि कलीसिया वास्तव में एक परिवार है मसीह में भाई-बहनों से बना है?

किस प्रकार यह दृष्टिकोण उनकी जीवन शैली में परिवर्तन लेके आएगा?

टिप्पणियाँ -

२. मसीह की देह।

क. ग्रीक भाषा में "देह" का अर्थ किसी ऐसी चीज़ की एकता है जिसमें अलग-अलग सदस्य हैं।

ख. पौलुस ने कलीसिया के इस उल्लेख का इस्तेमाल निम्न बातों पर ज़ोर देने के लिए किया:

१) यीशु मसीह और कलीसिया के बीच एकता।

२) कलीसिया में पाए जाने वाले लोगों के बीच एकता।

ग. वाक्य "मसीह की देह" का इस्तेमाल निम्न जगहों पर भी किया गया है:

१) क्रूस पर यीशु के बलिदान की व्याख्या करने के लिए (देखें रोमियों ७:४; इब्रानियों १०:१०)।

२) प्रभु भोज के भोज की व्याख्या करने के लिए (देखें १ कुरि. १०:१६; ११:२३-२९)।

घ. यूहन्ना १५:१-६ में हम मसीह की देह की अवधारणा को बिल्कुल स्पष्ट रूप से देख सकते हैं।

१) देह, सिर के बिना विकलांग है।

२) डालियाँ, दाखलता के बिना सूख जाती है (पद ६)।

३) कलीसिया मसीह के बिना कुछ नहीं है (पद ५)।

ङ. यीशु कलीसिया के सिर हैं (देखें इफि. १:२२, २३; कुलु. १:१८)।

१) देह, सिर पर निर्भर करती है।

२) देह, सिर की तरफ से आने वाले निर्देशों का काम करती है (ध्यान दें कि देह के एक हिस्से के विकलांग होने का कारण अपने मस्तिष्क द्वारा दिए गए संकेतों का प्रतिउत्तर न देना है)।

च. हो सकता है कि, मसीह की देह के सिद्धांत का सबसे महत्वपूर्ण निहितार्थ कलीसिया की एकता की ज़रूरत है (देखें १ कुरिन्थियों १२:१२, २०)। याद रखें: एकता के लिए प्रेरणा प्रेम है।

टिप्पणियाँ -

छ. मसीह की देह के विचार का तात्पर्य कलीसिया के भीतर पाई जाने वाली विविधता है। यह सब अलग-अलग भाग हैं, जिनमें प्रत्येक भाग के अलग-अलग कार्य हैं। फिर भी, वे एक साथ कार्य करते हैं (देखें रोमियों १२:४-८ और १कुरि. १२:१४)। प्रत्येक भाग को उसका कार्य करने के लिए प्रशिक्षित करना चाहिए। प्रत्ये सदस्य एक सेवक होना चाहिए (इफि. ४:११-१३)।

ज. प्रत्येक सदस्य का समर्पित होना बहुत महत्वपूर्ण है। प्रत्येक सदस्य अन्य सदस्यों पर निर्भर होता है (देखें इफि. ४:१६ और १ कुरि. १२:२२, २६)।

झ. मसीह के देह में पवित्र आत्मा के वरदानों का पाया जाना बहुत महत्वपूर्ण है। प्रत्येक सदस्य को अपने वरदान या वरदानों का इस्तेमाल मसीह की देह को उन्नत बनाने के लिए करना चाहिए (देखें रोमियों १२:६ और १ कुरि. १२:७)।

ञ. कलीसिया जगत की ज्योति है क्योंकि यह मसीह की देह है, जो कि ज्योति है (यूहन्ना ८:१२)। मसीह यीशु अपनी देह के द्वारा अपनी सेवकाई को जारी रखते हैं।

चर्चा विषय

अगुवे होने के नाते, यदि हम वास्तव में यह मानते हैं कि कलीसिया मसीह की देह है, तो इसका अर्थ है कि हमें प्रत्येक व्यक्ति को अपने विभिन्न वरदानों का इस्तेमाल करने और उसे बढ़ाने की अनुमति देनी चाहिए। हमें देह को एक साथ काम करने की शिक्षा देकर इस विविधता के भीतर एकता को बढ़ावा देना चाहिए। एक "देह" के माहौल या उसके वातावरण को विकसित करने के तरीकों पर चर्चा करें।

३. परमेश्वर का भवन या परमेश्वर का मंदिर।

क. मसीह, तम्बू और मंदिर की परिपूर्णता हैं (देखें इब्रानियों ९:११-२४ और यूहन्ना २:१९-२२)।

१) इस प्रकार, कलीसिया परमेश्वर का भवन है (देखें इब्रानियों ३:६ और १तीमुथियुस ३:१५)।

२) यह पवित्र मंदिर है (देखें इफि.२:२१ और २ कुरि. ६:१६)।

३) कलीसिया एक ऐसा निवास स्थान है जहाँ परमेश्वर अपनी आत्मा के द्वारा वास करते हैं (देखें इफि. २:२२ और १ कुरि. ३:९, १६)।

टिप्पणियाँ -

ख. यह वर्णन कलीसिया में पवित्र आत्मा की उपस्थिति पर केन्द्रित होता है (देखें यूहन्ना १४:१७, २३ और १ कुरि. ३:१६)। ध्यान दें; पवित्र आत्मा सभा के स्थान को लेकर चिंतित नहीं होते। दुर्भाग्यवश, कुछ लोग कलीसिया के इस वर्णन का इस्तेमाल महंगी इमारतों के निर्माण करने हेतु अपनी सांसारिक इच्छा को तर्कसंगत बनाने के लिए करते हैं।

ग. यदि कलीसिया एक इमारत है, तो इसका एक निर्माता होना चाहिए। वह निर्माता यीशु हैं (मत्ती १६:१८)। वह स्वयं बनाने वाले और निर्माण सामग्री हैं।

१) यीशु इमारत की नींव हैं (१ कुरि. ३:११)।
२) यीशु कोने के सिरे का पत्थर हैं (१ पत. २:४-८; कुलु. २:६; इफि. २:२०-२२)। यीशु कलीसिया के जीवन के केंद्र हैं।

घ. एक इमारत और मंदिर के रूप में कलीसिया का यह विचार इस वास्तविकता को इंगित करता है कि कलसिया में कई "छोटी कलिसियाएँ" शामिल हैं।

१) एक मसीही परमेश्वर के भवन में निर्माण के दौरान इस्तेमाल किये जाने वाले पत्थरों में से एक पत्थर है (१ पतरस २:५)।

२) एक बार फिर हम एकता के महत्त्व को देख सकते हैं। प्रत्येक सदस्य को भाग लेना चाहिए।

ङ. अंत में, आइये हम ज़ोर दें कि परमेश्वर के भवन के रूप में कलीसिया का वर्णन उसके बीच में परमेश्वर की उपस्तिथि के बारे में बताता है (जक ८:२३; १ कुरिन्थ १४:२४, २५)।

चर्चा विषय

परमेश्वर के भवन (कलीसिया) का एक हिस्सा होने के लिए, हम में से प्रत्येक को दिए गए प्रश्नों पर विचार करना चाहिए:

मेरे निर्माण में किस प्रकार की गुणवत्ता पायी जाती है? मेरा जीवन कैसा है?

परमेश्वर के भवन का एक भाग होने के नाते मेरी क्या ज़िम्मेदारी बनती है (१ कुरि. ३:१२-१५; १ कुरि. ३:१७)?

मुझे किसके साथ कार्य करना चाहिए (देखें २ कुरि. ६:१४-१८)?

टिप्पणियाँ -

४. मसीह की दुल्हन।

क. पुराने नियम में इस्राएल (देखें यशा. ५४:१-८; ६२:४)।

१) परमेश्वर के साथ मज़बूत और घनिष्ठ सम्बन्ध (एस.एस ४:९)।

२) समर्पण और विश्वासयोग्यता (यिर्म. ३; यहेज. १६; होशे २:१४-२०)।

ख. नए नियम में कलीसिया (देखें मरकुस २:१८-२०; मत्ती २५:१-१३;प्रकाशितवाक्य १९:७)।

१) शुद्धता और नैतिकता (इफिसियों ५:२२, २३)।

२) समर्पण, विश्वासयोग्यता और भक्ति (रोमियों ७:१-४; २ कुरि. ११:२-४; मत्ती २१:३१)।

३) प्रेम (प्रका. २:१-७)।

४) विआह के लिए दुलहन का तैयार होना (मत्ती २५:१-१३; प्रका. १९:६-९)।

५. परमेश्वर के सेना।

क. कलीसिया एक सेना है क्योंकि यहाँ एक युद्ध है (देखें १ तीमु. १:१८;६:१२; २ तीमु. २:३, ४; २ कुरि. १०:३; इफि ६:१२)।

ख. इसलिए, कलीसिया को समझना चाहिए कि उसका शत्रु कौन है।

१) अन्य लोग उसके शत्रु नहीं हैं (इफि. ६:१२)।

२) शत्रु में निम्न बातें शामिल हैं:

क) शैतान और उसकी दुष्टात्माएं (१ पतरस ५:८; प्रकाशितवाक्य १२:९-१७; मत्ती १२:२४)।

ख) ऐसा संसार, जिसे उन सभी चीजों के रूप में परिभाषित किया गया है जो यीशु के प्रभुत्व के अधीन नहीं है। शैतान संसार का देवता है (देखें २ कुरि. ४:४; इफि.२:२; यूहन्ना १४:३०; और १ यूहन्ना ५:१९)।

ग) हमारी अपनी देह, या हमारा पापी स्वभाव (देखें रोमियों ८:३-८; गला. ५:१७-२१; और रोमियों ७:१४-२०)।

टिप्पणियाँ -

ग. इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि सेना को अपने प्रधान (सेना अध्यक्ष) का पता होना चाहिए।

१) मसीह सेना के प्रधान या अध्यक्ष हैं।

२) सेना का अध्यक्ष अनुशासन और आज्ञाकारिता की मांग करता है (लूका ७:१-१०)।

क) १ यूहन्ना ५:४ में, हम देखते हैं कि विश्वास संसार के विरूद्ध युद्ध में विजय दिलाता है, लूका ७:९ में विश्वास शब्द का इस्तेमाल सेना के अध्यक्ष या प्रधान के प्रति आज्ञाकारी होने के सन्दर्भ में परिभाषित किया गया है।

ख) मसीह की आज्ञा का पालन किये बिना, कलीसिया युद्ध पर जय पाने में असक्षम है।

३) सेना को अपने शत्रु विजय पाने के लिए अपने सेना अध्यक्ष के अधीन होना चाहिए (याकूब ४:७)।

क) इसके अलावा, उन्हें कलीसिया के अगुवों के भी अधीन होना चाहिए (इब्रानियों १३:१७)।

ख) एक दूसरे के अधीन होना – सैनिक को सैनिक के (इफिसियों ५:१८-२१)।

४) यह आवश्यक है कि सेना को अपने कवच के बारे में पता हो और वह उसे इस्तेमाल करे (इफिसियों ६:१०-२०)।

५) सेना को अपने हथियार के बारे में पता होना और उसे इस्तेमाल करना ज़रूरी है (२कुरि. १०:३-५)।

क) प्रार्थना और स्तुति (देखें इफि. ६:१८; प्रेरितों १६:२२-३०)।

ख) क्रूस (देखें कुलुस्सियों २:१४, १५)।

ग) आत्मा के वरदान (देखें १ तीमु. १:१८)।

घ) भोज; संगती; Koinonia अर्थात कोइनोनिआ (देखें सभोपदेशक ४:९-१२; लूका १०:१)।

ङ) एक अनुशासन का जीवन (देखें १ कुरि. ९:२५-२७)।

टिप्पणियाँ -

चर्चा विषय

चर्चा करें यदि हम सम्पूर्ण रूप से परमेश्वर की सेना के रूप में कलीसिया की अवधारणा को स्वीकार करते हैं, तो किस प्रकार हमारा जीवन निम्न बातों के द्वारा प्रभावित होगा:

- शत्रु के आक्रमण के दौरान एक युद्ध के क्षेत्र में होना
- आप युद्ध के दौरान अपने खाली समय का इस्तेमाल कैसे करते हैं
- अधिकार के प्रति आज्ञाकारिता और अधीनता के लाभ
- अधिकार के प्रति अवज्ञा के परिणाम
- प्रशिक्षण की आवश्यकता

III. संस्कार।

लेखक की टिप्पणी:

जब आप बपतिस्मे और प्रभु भोज पर इस खण्ड को शिक्षा देते हैं, तो संभवतः कई प्रश्न और राय होंगी। जब आप प्रत्येक शिक्षण बिन्दु के द्वारा आगे बढ़ते हैं और समय के होते हुए उन्हें प्रतिउत्तर देते हैं तब उन्हें प्रश्न करने का अवसर दें। स्मरण दिलाया जाए कि ये विवाद संबंधी विषय हैं और तर्कसंगत परिस्थितियों से बाहर निकलने की कोशिश करें।

हमें एक दूसरे का आदर-सम्मान करना चाहिए, चाहे हम इससे असहमत क्यों न हों।

क. बपतिस्मा।

१. नए नियम में बपतिस्मा।

क. मत्ती ३:१३-१५; २८:१६-२०।

ख. मरकुस १०:३८-४०; १६:१५, १६।

ग. लूका १२:४९, ५०।

घ. यूहन्ना ३:५; ३:२२, २३; ४:१, २।

ङ. प्रेरितों २:३८, ४१; ८:१२, १३; ८:३६-३९; ९:१८, १९; १०:४७, ४८; १६:१४, १५; १६:२५-३४; १८:८; १९:३-५; २२:१६।

च. रोमियों ६:१-४।

टिप्पणियाँ -

छ. १ कुरि. १:१०-१७; १०:१, २; १२:१२, १३; १५:२९।

ज. गला. ३:२६, २७।

झ. इफि. ४:४-६; ५:२६, २७।

ञ. कुलु. २:११, १२।

ट. तीतु. ३:५।

ठ. इब्रा. ६:१,२; १०:२१, २२।

ड. १ पतरस ३:१८-२२।

ढ. १ यूहन्ना ५:६-८।

२. हम बपतिस्मा क्यों लेते हैं?

क. यह यीशु की आज्ञा है (मत्ती ३:१५; २८:१९)।

ख. यह आत्मिक सत्यों का प्रतिक (रोमियों ६; कुलु. २:१०-१२)। जिस नाम से एक विश्वासी ने बपतिस्मा पाया होता है उस नाम से यह उन्हें पहचानता है।

३. शब्द "बपतिस्मे" का क्या अर्थ है?

क. इसका अर्थ डूबना, डुबोना, डुबकी लगाना, अभिभूत होना इत्यादि होता है।

ख. ग्रीक साहित्य में, इस शब्द का इस्तेमाल पानी से भरे जहाज की व्याख्या के लिए किया जाता है। डुबकी लगाने और अभिभूत होने का विचार प्रमुख है।

लेखक की टिप्पणी:

"अभिभूत" होने को विचार पवित्र आत्मा के बपतिस्मे के सम्बन्ध में बहुत रूचिकर है। अनेकों बार जब लोग पवित्र आत्मा का बप्तिस्मा प्राप्त करते हैं तो वह गिर जाते हैं मानों कि वे अभिभूत हों (कई लोग इसे आत्मा में बेहोश हो जाना कहते हैं (देखें प्रेरितों के काम ९:४ तथा १८:६)। यह विषय विवादास्पद है और हम नहीं चाहते कि इससे पानी के बपतिस्मे पर हमारी चर्चा पर कोई असर पड़े ।

टिप्पणियाँ -

४. लोगों का बतिस्मा किस प्रकार होता है?

क. छिड़काव -- यह इस अर्थ में मान्य हो सकता है कि पुराने नियम में बलि का लहू छुटकारे के संदर्भ में जुड़ा हुआ था।

ख. उंडेलने का कार्य -- प्रारंभिक कलीसिया (जैसे कि "Didache अर्थात डिडके" में कहा गया है, जो कि प्रारंभिक कलीसिया से ली गयी शिक्षाओं का एक संग्रह है), मानती है कि यह दूसरा विकल्प है।

ग. डुबकी देना -- यह तरीका शाब्दिक अर्थ के साथ अधिक सरेंखित है, तथा प्रतीकवाद के साथ जुड़ा हुआ है।

१) यह तरीका नए नियम में दिखाया गया प्रतीत होता है (देखें यूहन्ना ३:२३; मर.१:१० ; और प्रेरितों. ८:३९)।

२) यह उन यहूदियों की विधि थी जिन्होंने यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले से पहले बप्तिमा दिया था।

३) यह मसीह के साथ गाड़े जाने को प्रदर्शित करने का सबसे उत्तम तरीका है (रोमियों ६:३,४)।

५. बपतिस्मा किसे देना चाहिए?

क. कई लोग मानते हैं कि बपतिस्मा देने वाला एक "पेशेवर" सेवक होना चाहिए। हालांकि, नया नियम सिद्धांत के एक बिन्दु के रूप में स्पष्ट रूप से इस बात की शिक्षा नहीं देता (देखें प्रेरितों ८:३८ और प्रेरितों. ९:१७, १८)। आप क्या मानते हैं? बपतिस्मा देने के लिए एक व्यक्ति के पास क्या अधिकार होना चाहिए?

ख. फिर भी, कई बार "पेशेवर" सेवक देते हुए पाए जाएंगे। कुछ भी हो, ध्यान उस पर नहीं होना चाहिए जो बपतिस्मा दे रहा है। बल्कि जिसे बपतिस्मा दिया जा रहा उस पर तथा बतिसमे के अर्थ पर होना चाहिए।

६. बपतिस्मा कब होना चाहिए?

क. बपतिस्मे तब होता है जब कोई व्यक्ति पश्चाताप करता है (प्रेरितों २:३८) और विश्वास करता है (प्रेरितों ८:१२)।

ख. हम नए नियम में पाते हैं कि एक व्यक्ति के मन परिवर्तन के तुरंत बाद उसे बपतिस्मा दिया गया (देखें प्रेरितों. ८:१२, ३६-३८; ९:१७, १८; १०:४७, ४८; १६:३३)।

टिप्पणियाँ -

ग. एक विश्वासी होने के नाते, एक व्यक्ति को केवल एक बार बपतिस्मा लेने की आवश्यकता होती है।

१) हालांकि, यदि किसी व्यक्ति ने मन परिवर्तन से पहले बपतिस्मा लिया है तो मेरी यह सलाह रहेगी कि वह व्यक्ति फिर से बपतिस्मा ले।

२) पानी में कोई आश्चर्यजनक बात नहीं है। बपतिस्मा केवल तभी सार्थक है जब उसके द्वारा दर्शाई जाने वाले वास्तव में विद्ध्यमान हों। बपतिस्मा धार्मिक रिवाज़ से अधिक बढ़कर है।

३) इसलिए, मन के बदले जाने से पहले लिया गया बपतिस्मा बिलकुल भी मान्य नहीं है। इस स्थिति में "दुबारा" बपतिस्मा लेने के लिए, एक विश्वासी होकर पहली बार में ही वास्तविक रूप से बपतिस्मा लेना चाहिए।

७. बपतिस्मे का स्थान क्या होना चाहिए?

क. आमतौर पर, जहाँ पानी होता है, वही बपतिस्मा दिया जाता है (प्रेरितों ८:३६)। हालांकि, किसी निश्चित प्रकार के पानी की जगह पर बपतिस्मा होना आवश्यक नहीं है, जैसे नदी, समुद्र आदि। (देखें प्रेरितों. १०:४४-४८ और १६:२५-३३)।

ख. नए नियम के प्रत्येक विषय में, बपतिस्मे के "कहाँ" शब्द के लिए सार्वजनिक आयाम पाया जाता है।

८. बपतिस्मे का क्या अर्थ है?

क. बपतिस्मा क्या है:

१) यह मसीह के साथ एक व्यक्ति के मिलन का प्रतीक और मुहर है।

क) वह मसीह का है। वह मसीह में है (देखें प्रेरितों. ८:१६; रोमियों ६:३; गलातियों ३:२७)।

ख) मसीह के मारे जाने, गाड़े जाने, और पुनः जीवित होने का साथ मिलन (देखें रोमियों ६:३)।

ग) मसीह की देह के साथ मिलन। परमेश्वर के परिवार के साथ मिलन (देखें १ कुरि. १२:१३)।

टिप्पणियाँ -

२) यह पापों की क्षमा का प्रतीक और मुहर है।

क) क्षमा (देखें प्रेरितों. २:३८)।

ख) शुद्ध किया जाना तथा धोया जाना (देखें प्रेरितो. २२:१६; इब्रानियों १०:२२)।

ग) पुनर्जन्म और नया जन्म (देखें तीतु. ३:५; रोमियों ६:३, ४, ११)।

ख. बपतिस्मा क्या नहीं है:

१) बपतिस्मा किसी वास्तविक कार्य का प्रतीक एवं मुहर है। कुछ ऐसा कार्य जो बीते दिनों में हो चुका है। वह उस चीज़ के होने का कारण नहीं है।

क) बपतिस्मा उद्धार, क्षमा, नए जन्म, पुनर्जन्म, और मसीह के साथ मिलन का मार्ग नहीं है।

ख) बपतिस्मे का अर्थ एक व्यक्ति के जीवन की वास्तविकता से है।

ग) यदि बपतिस्मा वास्तविक नहीं होता, तो बपतिस्मा कोई मायने नहीं रखता। पानी में कोई आश्चर्यजनक बात नहीं है।

घ) एक प्रतीक तब ही मायने रखता है जब उसका कोई वजूद हो। इस प्रकार, मैं बच्चों के बपतिस्मे पर विश्वास नहीं करता (लेखक की राय)।

२) बपतिस्मा लिए बिना उद्धार संभव है। क्रूस पर चढ़े डाकू की घटना पर विचार करें (लूका २३:४३)।

लेखक की टिपण्णी:

यहां हम याद कर सकते हैं कि हम सीधे तौर पर इब्रानी खतने के साथ बपतिस्मे की बराबरी नहीं कर सकते। एक इब्रानी का खतना उसके शारीरिक जन्म के बाद किया गया था क्योंकि वह शारीरिक रूप से परमेश्वर के लोगों में पैदा हुआ। हालांकि, किसी ने भी मसीही होकर जन्म नहीं पाया। एक मसीही को उसके आत्मिक जन्म के बाद बपतिस्मा दिया जाता है क्योंकि वह आत्मिक रूप से परमेश्वर के लोगों में जन्म पाता है।

उसी समय, यह कहा जाना चाहिए कि जिस हद तक बच्चे के बपतिस्मे को देह के लिए बच्चे के समर्पण के समारोह के रूप में समझा जाता है, इसे वैध माना जा सकता है।

टिप्पणियाँ -

ग. साथ ही हमें यह भी याद रखना चाहिए कि बपतिस्मा बहुत महत्वपूर्ण है(देखें मरकुस १६:१६; प्रेरितों. २:३८; मत्ती २८:१९)।

१) यह एक आज्ञा है।

२) बपतिस्मा मसीह के साथ एक व्यक्ति की पहचान करता है।

क) यह यीशु को अपना प्रभु और उद्धारकर्ता स्वीकार करने के निर्णय और समर्पण की एक आधिकारिक और सार्वजनिक घोषणा है।

ख) बपतिस्मे में, एक व्यक्ति को सार्वजनिक रूप से मसीह का अनुसरण करने के अपने निर्णय का पता होता है।

ग) बपतिस्मे के अर्थ का यह हिस्सा बहुत अधिक महत्वपूर्ण और वास्तविक है जहां मसीहियों पर सताव होता है।

घ. अंत में, हालांकि बपतिस्मा एक प्रतीक और एक मुहर है, हम यह नहीं कह रहे हैं कि घटना या बपतिस्मे के प्रक्रिया के दौरान कुछ भी नहीं होता। यदि प्रतीक में प्रतीक बनने के कुछ लक्षण हैं, तो उस प्रतीक के कार्य किसी पर अपने प्रभाव दल सकते हैं।

लेखक का उदाहरण:

उदाहरण के लिए, कई संस्कृतियों में हाथ मिलाना दोस्ती का प्रतीक है (या कम से कम दोस्त बनने की इच्छा)।

यदि दोस्ती वास्तविक नहीं है, तो हाथ मिलाने का कोई मतलब नहीं होता। यदि दोस्ती वास्तविक है, तो हाथ मिलाना मायने रखता है।

इसके अलावा, हाथ मिलाने की क्रिया मित्रता को प्रभावित कर सकती है। कोई भी प्रतीक उस चीज़ को अधिक मजबूत तब बनाता है जब वह प्रतीकात्मक वस्तु पहले से विद्यमान हो।

बपतिस्मे में भी ऐसा ही होता है। यदि व्यक्ति मसीह के प्रति पहले से समर्पित है तो बपतिस्मे की क्रिया मसीह के प्रति समर्पण को और बढ़ा सकती है।

टिप्पणियाँ -

अपना उदाहरण लिखें:

चर्चा विषय

पानी के बपतिस्मे के विषय पर अपनी चर्चा समाप्त करें। किसी भी प्रश्न का उत्तर दें और टिप्पणियों के लिए अनुमति दें। एक-दूसरे का सम्मान करना याद रखें!

ख. प्रभु भोज।

चर्चा विषय

जब आप प्रभु भोज के विषय पर दिए गए वचनों का अध्ययन करते हैं, तब इस्तेमाल किए जाने वाले तत्वों (रोटी और दाखरस) की प्रकृति और परिभाषा के बारे में तथा किस को तत्वों का प्रबंध करना, और कलीसिया के अनुशासन के लिए निहितार्थ करना चाहिए के विषय में चर्चा को बढ़ावा दें।

१. अध्ययन के लिए बाइबल के वचन।

क. निर्गमन १२:१-२८।

ख. व्यवस्थाविवरण १६:१-८।

ग. एज्रा ६:१९-२२।

घ. मत्ती २६:१७-३०।

ङ. मरकुस १४:१२-२६।

च. लूका २२:७-३०; २४:२८-३५।

छ. यूहन्ना ६:२५-५९; २१:१-१४।

ज. प्रेरितों. २:४२-४७; २०:७।

टिप्पणियाँ -

झ. १ कुरि. ५:७-११; १०:३, ४; १०:१४-२२; ११:१७-३४।

ञ. प्रका. १९:६-९।

२. प्रभु भोज का इतिहास।

क. यह उस अंतिम भोज पर आधारित है जो प्रभु यीशु ने अपने चेलों के साथ किया था (मरकुस १४:१७-२६ और लूका २२:१४)।

ख. प्रारंभिक कलीसिया में, इसे अक्सर अमल में लाया जाता था (प्रेरितों. २:४२, ४६)।

ग. यह एक आज्ञा है (१ कुरि. ११:२४, २५)।

३. प्रभु भोज के विषय में चेतावनियाँ (देखें १ कुरि. ११:१७-३४)।

क. पौलुस वचन १७-२२ में प्रभु भोज को अनुचित रीति से लेने के बारे में बताते हैं।

ख. वह अनुचित रीति को प्रकशित करते हुए प्रभु भोज की उचित रीति से लेने के लिए बढ़ावा देते हैं (वचन २३-२६)।

ग. वह अनुचित रीति के निहितार्थ और परिणामों को परिभाषित करते हैं (वचन २७-३२)।

घ. वह प्रभु भोज को अनुचित रीति से लेने के कार्य को समाप्त करने के लिए निर्देश देते हैं (वचन ३३, ३४)।

ध्यान दें: इस विषय पर अधिक जानकारी के लिए MOTMOT (मोटमोट) पाठ्यक्रम के कलीसिया की संगती के अंतिम खण्ड को देखें।

चर्चा विषय

दिए गए आरेख का अध्ययन और चर्चा करें। यह प्रभु भोज को समझने के लिए एक नमूने के रूप में काम कर सकता है।

कलीसिया और संस्कार

टिप्पणियाँ -

सन्दर्भ का बिन्दु	फसह के पर्व से संबंधित	मसीही से संबंधित	अर्थ	शर्तें व वचन
पीछे की ओर देखना	यहूदियों ने निर्गमन में परमेश्वर द्वारा किए गए कार्यों की याद में फसह का पर्व मनाया। उत्सव का एक महत्वपूर्ण हिस्सा कहानी का... यादों का साझा किया जाना था -- देखें १२:२४-२७, १३, ८।	प्रभु भोज यीशु द्वारा किए गए कार्यों की एक याद है (१ कुरिन्थियों ११:२५)। इस प्रकार, यह "धन्यवाद देने" का समय है (जो कि ग्रीक में " eucharist अर्थात यूचरिस्ट" शब्द का अर्थ है -- प्रेरितों के काम २:४२)।	यह एक स्मारक सभा है। हम आदर के साथ और प्रभु यीशु की याद में इस भोज के उत्सव मनाते हैं। प्रभु भोज के माध्यम से यीशु द्वारा हमारे लिए किए गए कार्यों की सम्पूर्ण अनुभूति प्रगट होनी चाहिए।	१ कुरि. ५:७ लूका २२:१५ याद फसह के पर्व का भोज Eucharist अर्थात यूकरिस्टीया अंतिम भोज
स्वयं को देखना	फसह के दिन से पहले शुद्धिकरण का एक दिन था। हर एक प्रकार के खमीर (बुराई का प्रतीक) घर से हटा दिया गया था। लोगों ने स्वयं को तैयार किया।	एक मसीही को स्वयं की जाँच करनी चाहिए। उसे अपने पापों को स्वीकार करके और एक दृष्टिकोण और आत्मा के साथ मिलकर स्वयं को शुद्ध करना चाहिए जो कि प्रभु भोज और क्रूस के अनुरूप है (१ कुरिन्थियों ११:२७, २८ और १ कुरिन्थियों ५:७)।	प्रभु भोज लेना यह कहना है कि आपका जीवन मसीह के जीवन के साथ सर्वनिष्ठ है। यह स्वीकार करने और क्रूस के जीवन जीने के लिए है। यह मसीह के जीवन को साझा करने के लिए है। यीशु हमें अपने साथ भोज करने के लिए हमें आमंत्रित करते हैं। भोज मसीहियत का घनिष्ठ, व्यक्तिगत संबंध है।	रोटी तोड़ना देह और लहू
अपने चारों ओर देखना	उत्सव में अन्य लोग भी शामिल थे। इसमें बच्चों और पूरे परिवार ने भाग लिया। इसके अलावा, यह किसी भी अजनबी को आमंत्रित करने का रिवाज था जो आपके घर के बाहर थे और उत्सव में शामिल होने के लिए।	प्रभु भोज एक " koinonia अर्थात कोइनोनिया" (साझा) है। निहित, एक दूसरे के साथ सहभागिता है (१ कुरिन्थियों १०:१६; यहूदा १२; प्रेरितों के काम २:४२. ४६)। भोज के लिए यह आवश्यक है कि हम दूसरों के प्रति विचारशील हों (१ कुरिन्थियों ११:१७-३४)। प्रभु भोज उनके परिवार का भोज है।	प्रभु भोज लेने का अर्थ यह मानना है कि आपका जीवन अन्य विश्वासियों के जीवन से जुडा हुआ है। हमने एक जैसा उद्धार पाया है। इस प्रकार, हम एक ही रोटी लेते हैं। हम एकता में हैं। इसके अलावा, इससे हमारा यह कहना होता है कि हमने अपना जीवन दूसरों की सेवा के लिए बलि के रूप में दिया है।	पवित्र भोज्ज आगापे भोज Koinonia (कोइनोनिया)
आगे की ओर देखना	उत्सव में भविष्य के उद्धार के लिए आशा की भावना थी। इस प्रकार, मेज पर हमेशा एक खाली जगह थी	प्रभु भोज के उत्सव में प्रभु के पुनः आगमन की आशा है (१ कुरिन्थियों ११:२६; मरकुस १४:२५)। इसके अलावा, मेम्ने के विवाह के भोज के आने की आशा है (प्रकाशितवाक्य १९:९)।	प्रभु भोज को लेने का अर्थ यह कहना है कि हम प्रतीक्षा कर रहे हैं, आशा लगाए हुए हैं, और स्वर्ग में भोज की प्रतीक्षा कर रहे हैं। हम आशा और उम्मीद के इसे लेते हैं।	प्रभु की मेज़ मेमने का भोज

टिप्पणियाँ -

४. प्रभु भोज के विषय में निष्कर्ष।

क. प्रभु के भोज का बांटा जाना एक मसीही के जीवन की एक अनमोल घटना है। यह अक्सर किया जाना चाहिए।

ख. जैसा कि हमने देखा, प्रभु भोज को समझने के कई तरीके हैं। हालांकि, एक बात निश्चित है... हम चाहे पीछे या आगे की ओर, स्वयं को या अपने चारों ओर देखें, लेकिन हमारा ध्यान हमेशा एक व्यक्ति अर्थात यीशु मसीह पर होता है। और इसलिए १ कुरिन्थियों ११:२४ के शब्द हमारे मनों में गूंजते हैं, "मेरे स्मरण के लिए यही किया करो"।

टिप्पणियाँ -

कलीसिया और संस्कार: अंतिम टिप्पणियाँ

१ डेविड वाटसन, आई बिलीव इन द चर्च (ग्रैंड रैपिड्स, एम.आई: डब्ल्यू एम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, १९७८)। रूपरेखा के कुछ भाग वाटसन के लेखन से लिए गए हैं।